बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-106 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अक्टूबर 2022 | मूल्य - 5 रूपए

बढ़ते प्रदूषण के कारण कामकाजी बच्चों हुए परेशान, स्वास्थ्य हुआ खराब

बालकनामा रिपोर्टर किशन संगीता रवि

एक तरफा यह जानकर कभी कभी खुशी होती हैं कि हमारा देश दिन पर दिन कितनी तरक्की कर रहा हैं, पर दूसरी ओर यह बात जानकर कभी कभी दुख भी होता है कि इस बढ़ती तरक्की से काफी नुकसान भी हो रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं मौसम बदलते ही कोहरे की वजह से प्रदूषण से कई तरह की दिक्कतें होने लगती है। दुर्भाग्य कि बात यह हैं कि इस बढ़ते वायु प्रदूषण के शिकार सड़क एवं कामकाजी बच्चे हो रहे हैं। बच्चों को ज्यादा दिक्कत तब होती है जब प्रदूषण नियंत्रण से बाहर होना शुरू हो जाता है क्योंकि वह खुले स्थानों में रहते हैं, जिससे वह वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियो के चपेट मे आने लगते हैं। इस मौसम में ऐसा अक्सर ही होता है कि जब प्रदूषण इतना ज्यादा हो जाता है कि सांस लेने में भी काफी दिक्कतें होती हैं। कई लोग तो अपने घरों में और ऑफिसों में एयर प्यूरीफायर में रहते हैं। जिन्हें इस तरह की दिक्कत बहुत ही कम होती है या ना के बराबर होती है। लेकिन सड़कों पर जो लोग रहते हैं और जो बच्चे रात दिन रेड लाइट, स्टेशन, फ्लाईओवर के नीचे कार्य करते हैं या वही उनका रहने का ठिकाना है, उन बच्चों को और उनके अभिभावकों को इस तरह की समस्या काफी झेलनी पड़ती है। आधुनिक समय में बढ़ते कारखानों के कारण और भी ज्यादा बीमारिओ का जन्म हो रहा हैं। बालकनामा के पत्रकारों ने वायु प्रदूषण से होने वाली समस्याओं पर लखनऊ, आगरा, नोएडा, दिल्ली आदि के सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जाकर विस्तार से जाना।

नोयडा निवासी 14 वर्षीय ज्योति ने बताते हुए कहा कि हम लोग सड़क के किनारे झुग्गी में रहते हैं और कई बार इतना ज्यादा कोहरा होता है कि कुछ नजर नहीं आता और सड़कों पर गाड़ी इतनी स्पीड में आती है कि वह भी नजर नहीं आती, जिस वजह से हमारे यहां के कई बच्चों को चोट भी लग चुकी है। इस तरह के एक्सीडेंट का शिकार बच्चे ही नहीं, बल्कि कई बार बड़े लोग भी हुए हैं।

लखनऊ में रहने वाली 12 वर्षीय दिव्या ने बताया कि वायु प्रदूषण के कारण जब भी इस प्रकार के रोग होते हैं तो सबसे पहले अभिभावक को पता ही नहीं रहता है कि यह सारे रोग वायु प्रदूषण से होते हैं। जब वायु प्रदूषण से कुछ भी रोग हमें हो जाते हैं तो अभिभावक इतने घबरा जाते हैं कि वह पास के डॉक्टरों के पास पहुंच जाते है। पश्चिम दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रह रहे परिवर्तित नाम नीरज ने बताया कि मैं अपने माता पिता के साथ झुग्गी बस्ती में रहता हूं। मैं और मेरे पिताजी अलग-अलग ठेली ले जाकर कूड़ा बीनने का काम करते है। हम सुबह के 5 बजे कबाड़ा बीनने के लिए निकल जाते हैं ताकि मार्केटों और सड़कों पर जल्दी और ज्यादा कबाड़ा मिल जाए। सुबह के समय कोहरा तो पड़ ही रहा है और तेज तेज हवा भी चलने लगी

हैं, जिसके कारण जब मैं रिक्शा चलाता हूँ तो मुझे काफी ठंड लगती है और कोहरे के कारण कुछ ज्यादा नजर भी नहीं आता। अपनी ठंड मिटाने के लिए जो भी कबाड़ा हमें मिलता जैसे प्लास्टिक, गत्ता, लोहा, कांच, बिजली का तार, आदि जिनमें से हम कुछ जलने वाली वस्तुओं को जला देते हैं और हाथ पांव सेकने लगते हैं। परंतु जब हम आग जलाते हैं तो उसमें से काला धुआं निकलता है और वह शरीर में भी पहुंचता है जो काफी नुकसान देता है जैसे, त्वचा खराब होना, सांस लेने में दिक्कत होना, टीवी जैसी भयंकर रोग हो जाना आदि। मजबूरी के कारण हम बच्चों को आग जलाकर अपनी ठंड दूर करनी पड़ती है। यदि हम आग नहीं जलाएंगे तो हमें ठंड लगती रहेगी और काम पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाएंगे और ज्यादा कबाड़ नहीं बिन पाएंगे। आगरा में रह रही दीप्ति ने बताया कि 'उनकी माताजी कबाड़ा चुनने का काम करती है और दीप्ति कभी-कभी अपनी माता जी के साथ कबाड़ा चुनने चली जाती है। वह अभी बच्ची है इसीलिए उन्हें प्रदूषण से कोई बड़ी परेशानी नहीं होती लेकिन जब प्रदूषण ज्यादा होने लगता है, तो उस समय में दीप्ति की माताजी की सांसे काफी तेज गति में चलने लगती हैं। और उन्हें कई तरह की सांस से संबंधित परेशानियां होने लगती है। ज्यादा प्रदूषण की वजह से ऐसा लगता है कि पूरी हवा में धूल मिल गई हो और सांस लेने में रेत जैसा एहसास होता है। जिसकी वजह से काफी दिनों तक सांस लेने से संबोधित कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि मेरी माता जी काफी बीमार रहती है तो उनकी इस वजह से कई बार तबीयत भी खराब हो जाती है। और मेरे पिताजी भी नहीं है इसीलिए मुझे काफी डर सताता है, क्योंकि मेरी माता जी के बाद मेरे घर में मुझे संभालने वाला कोई नहीं है।' नोएडा सेक्टर 76 की झुग्गी बस्ती में रह रहा दिनेश ने बताया 'जैसा कि पूरा भारत जानता है दिवाली के त्यौहार को काफी धूमधाम से मनाते हैं और इसमें पटाखों का काफी इस्तेमाल किया जाता है। परंतु दिवाली के समय पटाखे बैन हो जाते है। अभी भी चोरी किये हुए पटाखे झुग्गी बस्तियों में, गलियों में, कई दुकानों में मिल जाते हैं। परंतु इस समय पटाखे काफी महंगे भी मिलते हैं। अधिकतर लोग दीपावली पर पटाखों का इस्तेमाल करते हैं जिसके कारण पटाखों में से काफी सारा गंदा धुआ निकलता है। जिस कारण प्रदूषण बढ़ता जाता है। वायु प्रदूषण से काफी हानियां पहुंचती है, जैसे दिल का दौरा पड़ने का खतरा बढ़ जाता है। जहरीली हवा के महीन कण पीएम 2.5 खून में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे धमनियों मैं सूजन आने लगती है और फिर दिल के दौरे का खतरा बढ़ जाता है। धुए में उपस्थित नाइट्रोजन के कारण दमा, खांसी, तथा बच्चों में सांस के हार्ट अटैक हो जाते हैंह्न वातावरण मैं मौजूद प्रदूषकों के कारण मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर पड़ता है और प्रदूषण के कारण लोगों को बीमारियां भी हो रही हैं। हवा में जाने से सांस लेने में परेशानी, सीने में जकड़न, आंखों में जलन आदि जैसी समस्याएं होती है। इन सभी विषयों पर बात करने के दौरान पत्रकारों ने इन समस्याओं से बचने के लिए यह जानकारी बच्चों को भी दी।

किसी जोखिम से कम नहीं है कबाड़ा बीनने का काम

बातूनी रिपोर्टर जेनब व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

जहां गंदगी होती है वहां बीमारी का फैलना निश्चित है। यह बीमारियां किसी भी रूप में हमारे शरीर पर आक्रमण कर सकती हैं। इस बात से तो हम सभी भलीभांति परिचित हैं कि हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसी परिस्थितियों में रहते हैं। यह बच्चे जहां पर अपने रहने का ठिकाना बनाते हैं वह अमूमन ऐसे स्थान होते हैं, जिसके चारों और गन्दगी, कूड़ा-कचरा, नाला बहता रहता है। इसी वजह से कामकाजी बच्चे बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। इन्हीं समस्याओं से लखनऊ के सड़क एवं कामकाजी बच्चे गुजर रहे हैं। जब हमने इस बस्ती की विजिट की तो बच्चों ने बताया कि दीदी हम बच्चे अधिकतर कूड़ा बीनने का काम करते हैं और उसी से हम अपना पेट भरते हैं। लेकिन कभी-कभी यह काम हमारे ऊपर भारी पड़ जाता है। हम लोग जो भी कूड़ा बिनकर लाते हैं उसे हम अपनी झोपड़ी के चारों कर इकट्ठा करके रखते हैं, जिसके कारण कई प्रकार के जानवर उस कूड़े में अपना घर बना लेते हैं। एक बार की बात है कि एक दिन बरसात बहुत हुई जिसके कारण से कूड़े में छिपे हुए सभी जानवर बाहर आने लगे, उनमें सांप भी था। उस सांप ने एक बच्चे को काट लिया, जिसके कारण उसकी काफी हालत खराब हो गई। जैसे ही हम लोगों को पता चला कि उसे सांप ने काट लिया है उसको तुरंत डॉक्टर के पास ले गए और उसका इलाज करवाया गया। अभी वह बच्चा ठीक है। लेकिन इस दुर्घटना से उस बच्चे की जान भी जा सकती थी। बच्चों ने बातचीत के दौरान बताया कि वह बच्चे मजबूरी में यह सब काम करते हैं। इस काम पर ही उनका जीवन टिका हुआ है, तो वो इस काम को छोड़कर भी नहीं सकते चाहे कोई भी समस्या आ जाए।

भरपेट पकवान और अच्छे अच्छे गिफ्ट मिलने से बच्चों के चेहरे पर आ जाती है मुस्कान : नवरात्री

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

नवरात्रों का त्यौहार इन बच्चों के चेहरे पर एक नई मुस्कान लाता है। इस समय नवरात्रि का त्यौहार है और हमारे जितने भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत खुश हैं क्योंकि उनको इन दिनों मनपसंद चीजें खाने को मिलती हैं। हमारे लखनऊ पत्रकार विजिट के दौरान बच्चों से मिले और इस समय चलने वाले त्यौहार के बारे में उनकी राय पूछी तो बच्चों ने बताया कि दीदी हमारे भारत में जितने भी त्यौहार होते हैं उनमें से नवरात्रि का त्यौहार सबसे अच्छा होता है क्योंकि हमें घर के बाहर तरह तरह की अच्छी चीजें जैसे हलवा, पूरी, खीर, चना इत्यादि खाने को मिलती हैं, जिसको हम साल भर में एक बार भी नहीं खा पाते हैं। इसके साथ ही हमें चॉकलेट, चिप्स, मैगी, फ्रूटी इत्यादि चीजें भी हमें इन दिनों गिफ्ट में मिलती हैं। इस अवसर पर इन बच्चों को

घरों में कन्या खाने के लिए भी बुलाया जाता हैं और उनको पेट भरकर भोजन करवाया जाता है और उन्हें ले जाने के लिए भी खाने का सामान दिया जाता है, जिसे वह अपने मम्मी पापा के लिए ले जाते हैं ताकि उनके अभिभावक भी भरपेट खाना खा सके। इसके साथ ही बच्चों को लोग पैसे भी देते हैं, जिसे वह इकट्ठा करके अपने अभिभावकों को दे देते हैं, ताकि उनके महीने के खर्चे में हम उनकी थोड़ी बहुत मदद कर सके। यही वजह है कि बच्चों के लिए यह त्यौहार बहुत अच्छा है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खुले स्थान पर डायपर फेंकने से बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

ब्यूरो रिपोर्ट

डायपर के बारे में आप तो जानते ही होंगे। डायपर छोटे बच्चे को पहनाया जाता है। अब हर घरों में आपको नन्हे मुन्ने बच्चे डायपर पहने हुए देखने को मिलते हैं और हर घर में डायपर का इस्तेमाल किया जाता है। आज हम डायपर के विषय में इसलिए बातचीत कर रहे हैं क्योंकि डायपर को इस्तेमाल करने के बाद उसको कहाँ फेंका जाता है, यह जानना बहुत जरुरी है? यह खबर नोएडा सेक्टर 5 की है। हमारे पत्रकार ने जब इस सेक्टर की कुछ बिल्डिंगों का दौरा किया तो देखा कि सीढ़ियों पर डायपर फैले हुए हैं और वो बदबू मार रहे हैं। हमारे पत्रकारों ने बिल्डिंग में रह रहे बच्चों से भी बातचीत करके जाना कि यह डायपर खुले स्थान और सीढ़ियों पर क्यों पड़े हुए हैं?

बच्चों ने बताया कि, इस बिल्डिंग में 40 कमरे हैं और एक कमरे का किराया प्रति माह 4000 रूपए है। इस बिल्डिंग में हर किसी के घर में 1 से 2 छोटे बच्चे हैं और यह लोग बच्चों के लिए डायपर का इस्तेमाल करते हैं। इस बिल्डिंग के कोने कोने में कूड़ा दान रखा हुआ है और मकान मालिक ने सभी किरायेदारों को यह जानकारी भी दे रखी है कि अपना कूड़ा इस कूड़ेदान में डालें, खुले में ना डालें। परंतु कुछ लोग कूड़ेदान के पास आकर कूड़ा डालने की बजाय सीढ़ियों के ऊपर से ही कूड़ेदान में निशाना लगाते हैं, जिससे वह कूड़ा कूड़ेदान में जाने की बजाय उससे बाहर गिर जाता है। बहार गिरे हुए उस कूड़े को दोबारा उठाकर कोई भी उसे कूड़ेदान में भी नहीं डालते और कुछ लोग तो जानबूझ कर सीढ़ियों पर ही कूड़ा फेंक देते हैं। दिन हो या रात कुत्ते आकर उस कूड़े से डायपर निकलकर उसको मुंह में फंसा कर ले जाते हैं और उस डायपर की पूरी गंदगी सीढ़ियों पर फैल जाती है। जब हम बच्चे इस जीने से आते जाते तो वह बदबू मारता है और उसी के सामने से हमें निकल कर जाना पड़ता है। गलती से अगर उस पर पैर पड़ गया तो वो भी गन्दा हो जाता है। जिसके कारण हमें घर जाकर पैर धुलकर फिर वापस जाना पड़ता है। इस गन्दगी के कारण बच्चे बीमार भी पड़ रहे हैं। जब हम बच्चे खाना पका रहे होते हैं या खा रहे होते हैं तो भी बहुत बदबू आती है। मकान मालिक यहाँ पर नहीं रहता, वह दूसरी जगह पर रहता है और वह कुछ कुछ दिन में घूमने के लिए आता रहता है। इस कारण इन लोगों को कोई कुछ बोलने वाला नहीं है। लेकिन हम बच्चों के माता-पिता ने मकान मालिक से शिकायत की है लेकिन अभी तक इस समस्या का कोई हल नहीं निकल पा रहा है।

डेंगू के फैलने से बच्चे हुए परेशान

बातूनी रिपोर्ट खुशी व रिपोर्ट संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोग जानते हैं कि इस बार बहुत बारिश होने से जगह जगह पर पानी भर गया है। पानी भर जाने के कारण मच्छरों के पैदा होने से डेंगू कि बीमारी बहुत तेजी से फैल गई है जिसके कारण लोग बीमार पड़ने लगे हैं। हमारे लखनऊ के बच्चों की भी हालत कुछ ऐसी ही है। हमारे बालकनामा पत्रकार ने उनके साथ बैठक कर उनकी समस्या जानने की कोशिश की तो बच्चे ने बताया कि दीदी आजकल डेंगू की बीमारी बहुत ज्यादा फैल रही है और इसकी वजह से काफी लोग बीमार भी पड़ गए हैं ,इस डेंगू की बीमारी की वजह से हम लोग भी बहुत परेशान हैं। अगर घर में कोई एक भी बीमार पद गया तो इलाज का पैसा कहाँ से आएगा इसी बारे में सोच सोच कर दर लगता है। बारिश होने से काम भी ठीक से नहीं हो पा रहा है और दूसरी तरफ यह बीमारी भी फैलती जा रही है।

बिन बुलाए बाराती बनकर शादी बरात में पैसे लूटने का काम करते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर अंकुश, बालक नामा रिपोर्टर असलम

शादी बारात में धूमधड़ाके और नाच गाने के बीच अकसर कुछ ऐसे बच्चे हम सभी ने देखे होंगे जो खूब मजे से नाच रहे होते हैं और जिनको हमने न तो देखा होता है और न ही वो किसी रिश्तेदार के बच्चे होते हैं। ये बच्चे और कोई नहीं होते ये हमारे सड़क वाम कामकाजी बच्चे होते हैं । जो थोड़े पैसों के लालच में नाच रहे होते हैं। हम ऐसे ही बच्चों से मिले जो किसी भी शादी बारात में पैसे लूटते हैं। हमारे पत्रकार कन्हैया विलेज के दौरे पर गए तो उन्होंने कुछ बच्चों से बात की। उन बच्चों ने हमें बताया कि यहां से बहुत सारे बच्चे शादी में पैसे लूटने के लिए जाते हैं। ये बच्चे शादी में बिना बुलाए चले जाते हैं वहां उन्हें पेट भर खाना और पैसे दोनों मिल जाते हैं। बच्चों ने बताया कि वहां बहुत सारे खाने के पकवान मिलते हैं जैसे गुलाब जामुन, रसगुल्ला, दही भल्ले, टिक्की और भी बहुत सारी चीजें होती हैं। जब लोग डीजे पर नाचते हैं तो वो भी उनमें शामिल हो जाते हैं। उसके बाद हम सभी बरात में पैसे भी लूटते हैं। पैसे लूटते समय कई बार हमारे हाथ किसी के पैरों के नीचे या रोड़ पर आ जाने से चोट भी लग जाती है। कभी-कभी तो हमारे हाथों के ऊपर से बग्गी भीतर जाती है बग्गी वाला भी हमें डांटने लगता है और कभी-कभी तो हमारे ऊपर हाथ भी छोड़ देता है। पत्रकार ने उन बच्चों से कहा कि आपके घर वाले आपको कुछ नहीं कहते हैं, तो उन्होंने बताया कि हमारे माता पिता को कभी-कभी हम बरात में से पैसे लूट कर दे देते हैं जिससे वो खुश होकर हमें रात को बरात में जाने की इजाजत दे देते हैं। फिर हमारे पत्रकारों ने उन्हें समझाया और कहा कि अगर आप सभी को एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो उन्होंने बताया कि भैया मैं तो आर्मी ऑफिसर बनूंगा और मैं एक डांसर।

पढ़ने लिखने की बजाय कम उम्र में सड़कों पर चलते हैं ई-रिक्शा

बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

जब हम अपने घर या फिर गली मोहल्ले के बाहर निकलते हैं तब हमें पता चलता है कि बाहर की दुनिया कैसी है। साथ में यह भी पता चलता है कि हर व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ता है। कुछ इसी प्रकार के हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी हैं जो अपनी किसी न किसी मजबूरी के कारण कोई ना कोई काम करने को मजबूर हैं। अकसर हम लोगों ने बड़े लोगों को ही ऑटो, कार, ई-रिक्शा चलाते देखा है, लेकिन आजकल छोटे-छोटे बच्चे जिनकी उम्र लगभग (14-15) की होगी ई-रिक्शा, रिक्शा जैसा खतरनाक साधन चला रहे हैं। हमारे पत्रकार विजिट के दौरान ऐसे ही बच्चों से मिले और बात की। बात के दौरान पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप स्कूल जाकर पढ़ने लिखने की बजाय रिक्शा क्यों चला रहे हो ? तो ज्यादातर बच्चों ने बताया कि हम पढ़ाई लिखाई करना चाहता हैं पर घर की आर्थिक स्थिति सही ना होने के कारण या फिर अभिभावकों के ऊपर कर्ज का बोझ होने के कारण हम बच्चे यह सब काम करने के लिए मजबूर हैं। मतलब यह बच्चे किसी ना किसी चीज से वंचित हैं, जिसको पूरा करने के लिए इन्हें यह काम करना पड़ता है। पर यह शायद इन बच्चों को नहीं पता है कि अगर यह अभी से अपने आने वाले भविष्य के लिए पढ़ाई नहीं करेंगे तो आने वाला कल खराब हो सकता है। यह बच्चे अपने अभिभावकों की गलतियों को सुधारने में इतना व्यस्त हो गए हैं, कि अपनी जिंदगी को इस प्रकार के कामों में लगाकर बेकार कर रहे हैं।

जूते-चप्पलों की निगरानी करके दिनभर में कमा लेते हैं 50 रूपए

बातूनी रिपोर्टर रीता व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

हमारे बालकनामा अखबार की खबरों के माध्यम से इतना तो आपको भी पता लग गया होगा कि यह बच्चे अपना पेट भरने के लिए क्या क्या करते हैं और और किन किन मुश्किलों से गुजरते हैं? कुछ इसी प्रकार के बच्चों की तलाश में हमारे लखनऊ के बालकनामा रिपोर्टर विजिट पर निकली तो देखा कि ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो मंदिर में कोई ना कोई काम कर रहे हैं। जब वहां पर जाकर हम बच्चों से मिले और उनकी स्थिति जानने की कोशिश की तो पता चला कि ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो कि इस मंदिर में 24 घंटे रहते हैं। यह बच्चे जूते-चप्पलों की निगरानी रखने का काम करते हैं।

जब हमारी इस विषय पर बच्चों के साथ बात हुई तो बच्चों ने बताया कि दीदी जब कोई भी व्यक्ति जब मंदिर आता है, तो वह अपने जूते चप्पल मंदिर के बहार ही उतर देता और तब भगवान के पास प्रार्थना करने के लिए जाता है। हम इन चप्पल, जूते की निगरानी का काम करते हैं, क्योंकि हम बच्चे को और कोई काम नहीं मिल सकता। इसीलिए हम लोग यही काम करते हैं जिससे हमें दिन भर में एक, दो रूपए करके कोई न कोई दे देता है और इस तरह हम एक दिन में लगभग 50 रूपए तक कमा ही लेते हैं। हम बच्चों को कोई भी काम मिले हम करने के लिए तैयार हैं क्योंकि हमारे पास घर का खर्च चलाने वाला और कोई है नहीं ।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

छोटी सी उम्र में करते हैं मलबा चुनने का काम

बातूनी रिपोर्टर अतुल, बालक नामा रिपोर्ट असलम

आज मैं आपको ऐसी बात बताने जा रहा हूं जिसको सुनकर आप हैरान हो जाएंगे। हमारे रिपोर्टर घाटा गांव के दौरे पर गए थे तो उन्होंने वहां कुछ बच्चों को मलबा चुनते हुए देखा। हमारे रिपोर्टर ने उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि भैया हमारे यहां बड़ी-बड़ी सोसाइटियों की बिल्डिंगों का मलबा गिरता है। हमारे घरवाले हमें पढ़ने नहीं देते हैं इसीलिए हम सब यहां मलबा चुनते हैं। मलबे में हमे सरिया कील बिजली के तार आदि मिलते हैं, जिसे हम कबाड़ी वाले को बेच देते हैं। इसे बेचकर कुछ पैसे मिलते हैं तो उससे अपना घर चलाते हैं। कभी-कभी मलबा चुनते समय हमारे हाथों में हिट लग जाती है तो कभी कभार हमारे हाथों में कांच के टुकड़े भी घुस जाते हैं। हमारे पत्रकारों ने उनसे पूछा कि अगर आप सभी को एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो कुछ बच्चे कहने लगे भैया हम तो पुलिस में जाएंगे तो कुछ बच्चे बोले भैया हमें तो पढ़ाई करनी है और एक अमीर आदमी बनना है।

एक शहर से दूसरे शहर तक फैल रहा है बच्चा चोर गैंग का नेटवर्क

ब्यूरो रिपोर्ट

ज्ञातव्य हो कि बालक नामा के पत्रकारों ने आपके साथ सितंबर के महा में पश्चिम दिल्ली से बच्चे गायब होने की खबर साझा की थी। परंतु दिल्ली में ही नहीं नोएडा, लखनऊ और आगरा इन शहरों से भी बच्चे चोरी होने की वारदात शुरू हो गई है। हमारे पत्रकार ने नोएडा के तकरीबन 20 स्थानों का दौरा कर कामकाजी बच्चों से बातचीत की। उन्हें हर जगह बच्चे गायब होने की खबर मिली। नोएडा के सेक्टर 45 में पत्रकारों ने दौरा करने के दौरान 10 वर्ष बालिका से इस बारे में पूछा तो बालिका ने बताया कि," भैया इस समय हर जगह यह बात फैली हुई है, कि बच्चे चोरी हो रहे हैं और यह बात बिल्कुल हकीकत हैं। जिस गांव में हम बच्चे रह रहे हैं वहां अलग-अलग जगह से और गलियों से बच्चे चोरी हो रहे हैं। हम अपने माता पिता के साथ किराए के कमरे में रहते हैं। एक दिन हमारे पिता जी और माता जी काम पर गए हुए थे, हम बच्चे अपने घर के आगे खेल रहे थे और बगल में पड़ोस की एक बालिका भी खेल रही थी वह बालिका 2 वर्ष की थी। उस बालिका के भी माता-पिता काम पर गए थे और घर में सिर्फ दादी जी थी। दादी जी घर का कामकाज कर रही थी और एक व्यक्ति आया और बालिका को उठाने लगा। उठाने के बाद लेकर बाहर की ओर जाने लगा, जब तक मैं उस बालिका की दादी के पास पहुंचती इतनी देर में बाहर के दुकानदार ने उस बच्ची को पहचान लिया और उस व्यक्ति के हाथ में उस बच्ची को देखते हुए पूछा कि इस बच्ची को कहां लेकर जा रहे हो। वह बच्चे पकड़ने वाला व्यक्ति बोला कि यह मेरे परिवार की है और मैं बाहर घुमाने ले जा रहा हूं। तब तक उसी दौरान उस बच्ची की दादी तुरंत दुकान वाले के पास पहुंची और अपनी बालिका को उस व्यक्ति के हाथ में देखकर काफी नाराज हुई। उस व्यक्ति से पूछने लगी मेरे बच्चे को कहां लेकर जा रहे हो। वह तरह-तरह के झूठ बोलने लगा। झूठ बोलने के बाद वह पकड़ा गया और उसकी पिटाई भी की गयी। वह बोला मुझे छोड़ दो और फिर उसे वहां से भगा दिया गया। हम बच्चों का कहना है कि बच्चों को पकड़ने वाले लोग बाबा, किन्नर, भिकारी आदि के भेष बदल बदल कर भी आते हैं। इस कारण अधिकतर बच्चों को माता-पिता उनको स्कूल जाने से खुद ही इंकार कर रहे हैं और बाहर घूमने के लिए भी मना कर रहे हैं। बच्चे खुद भी स्कूल नहीं जा रहे हैं और काफी डरे हुए हैं।

घर और दुकान पर बुलडोजर चलने से परेशान कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

इस बात से तो सभी परिचित हैं कि हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे फुटपाथ, सड़क या झोपड़ी में रहते हैं। बहुत ही कम ऐसे बच्चे होते हैं, जिनका खुद का घर बना होता है। भले ही वह कैसा घर हो पर वह उनका खुद का घर होता है और यह भी डर नहीं होता है कि उनको वहां से कोई घर से बेघर कर देगा। लेकिन जो बच्चे सड़क, फुटपाथ या फिर झोपड़ी में रहते हैं उनको सबसे ज्यादा खतरा इस बात का रहता है कि उन्हें वहां से कोई भगा न दे। पर वह इस बात से अनजान होते हैं और वह जहां रहते हैं वही पर कोई ना कोई रोजगार करने लगते हैं। जब उनका रोजगार अच्छा खासा चलने लगता है, तभी उन्हें वहां से हटाने का आदेश मिल जाता है। उनको कुछ दिनों की मोहलत मिलती है और अगर वह उस समय तक वहां से अपना घर नहीं हटा पाते हैं तो बुलडोजर बुलावा कर घर और दुकान तोड़ दी जाती है। जिसके कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे और उनके अभिभावक बहुत ही परेशान हो जाते हैं। एक तो वह कितनी मुश्किल से अपना घर चलाने के लिए कोई ना कोई काम करते हैं लेकिन उसको भी हटावा दिया जाता हैं। लखनऊ के बच्चों ने रिपोर्टर बैठक के दौरान पत्रकार को बताया कि दीदी यहां पर झोपड़ी हटाने का आदेश आता रहता है और तो और दीदी जहां पर हमने अपनी गैराज कि दुकान खोल रखी हैं वहां पर भी बुलडोजर तोड़फोड़ कर के चला गया है। बच्चे ने बताया कि एक तो दीदी बहुत मुश्किल से हम अपनी दुकान बना पाते और उसके बाद बुलडोजर आकर तोड़फोड़ कर के चला जाता है। जिसके कारण हम लोगों को बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

पढ़ोगे लिखोगे तो बनाओगे अपना भविष्य उज्जवल

बातूनी रिपोर्टर रीता व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

पढ़ाई वह मार्ग है जिस पर चलकर हर कोई भविष्य में आगे बढ़ सकता है और अपने सपनों को साकार कर सकता है। यह तो आपको भी पता है कि जितनी जल्दी हम पढ़ाई के महत्त्व को समझ लेते हैं हमारे लिए उतना ही अच्छा होता है। कुछ यही हाल हमारे लखनऊ में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों का है उनका यह कहना है कि हमें पढ़ाई को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। इस विषय पर जब बच्चों से बातचीत हुई तो उन्होंने बताया कि कोरोना की वजह से लोग बहुत डर चुके हैं, खासकर हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे। इस दौरान इन बच्चों ने भी बहुत कुछ खोया है। लेकिन सबसे ज्यादा महामारी के दौरान उनकी पढ़ाई का नुकसान हुआ है। इसकी वजह से बच्चों के लगभग 1- 2 साल बर्बाद हो गए। इसीलिए अब हम बच्चों का यह प्रयास है कि अब हम लोग अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देंगे। साथ ही लॉकडाउन के कारण जिन बच्चों ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी हैं, उनको भी हम अपने साथ स्कूल लेकर जायेंगे। ताकि वो भी पढ़ाई के महत्त्व को समझें और अपना मन पढ़ाई में लगाएं। यदि वो पढ़लिख जायेंगे तो उनका भी भविष्य उज्जवल होगा।

अश्लील कार्य करने के लिए लड़कियों को बनाया जाता है मोहरा

ब्यूरो रिपोर्ट

बच्चों पर आस पास के माहौल का बहुत असर पड़ता है। दिल्ली के कुछ ऐसे स्थान हैं, जहां पर अश्लील कार्य होते हैं। पश्चिम दिल्ली की कुछ रेलवे पटरियों के बगल में झुग्गी बस्ती में रहने वाली बालिका सुमन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जैसे ही लड़कियां 12 से 13 वर्ष की होती हैं वो इतनी कम उम्र में ही इतनी बड़ी लगने लगती हैं कि वह जैसे 18 से 20 वर्ष की हों। इस स्थान पर लड़कियां जैसे ही 10 से 12 वर्ष की होती हैं उनको बहुत गंदी नजरों से देखा जाता है। लोग सुंदर लड़कियों को देखकर अश्लील हरकतें करने के लिए गंदी गंदी बातें बोलते हैं। उसने बताया कि एक दिन शाम के समय मैं रेल पटरियों के पास खेल रही थी तभी एक सामने से आदमी आया और उसने बहुत शराब पी रखी थी और मुझे गंदी गंदी नजरों से देख रहा था। उसने मेरे पास में आकर मेरी स्कर्ट पकड़ ली और कहने लगा कि तुम मेरे साथ कहीं दूर चलो और मेरे साथ कुछ गंदी बातें करना। मैं उसके बदले आपको पैसे दूंगा। मैंने उसे जैसे ही मना किया वह मुझे गंदी गंदी गाली देने लगा और मुझे मारने भी लगा। वह व्यक्ति हमारे घर से 300 मीटर दूरी पर रहता है और वह कुछ काम नहीं करता। रात दिन चोरी करने का काम करता है। मुझे धमकी भी दे कर गया कि आज रात को मैं तुम्हारे घर में घुसकर चोरी भी करूंगा और तुम्हें उठा कर ले जाऊंगा। मैं इस बात को सुनकर बहुत डर गई थी और मुझे पूरी रात नींद भी नहीं आई। मैंने यह बात अपने घर में माता-पिता को भी बताई और वह यह बात सुनकर बहुत चिंतित हैं। इस स्थान पर अधिकतर किन्नरों का बसेरा है और किन्नर दूसरे व्यक्ति लोगों के साथ अश्लील कार्य करते हैं। इस कारण कुछ आसपास के नशेड़ी लोग हम बच्चों को मोहरा बनाते हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

लोगों के दुर्व्यवहार के कारण अपने को हीन भावना से देखते है कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर रीता व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

राह पर चलते हुए कुछ ऐसे बच्चे भी दिख जाते होंगे जिनके चेहरे पर हमेशा एक चिंता, डर, बदकिस्मती आपको दिख जाती होगी। कुछ लोगों को तो उन पर दया आ जाती है, पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके दिलों में दया नाम का कोई स्थान नहीं है। इस बार हमने उन बच्चों की तलाश की जो आमतौर पर हमें किसी भी सड़क, गली और होटल में देखने को मिलते हैं। जब उन बच्चों से हमारी बातचीत हुई तो उन्होंने अपनी भावनाओं को हमारे सामने रखते हुए यह कहा कि दीदी आजकल के लोग इतने कठोर दिल के हो गए हैं, कि उनको बात करने की भी तमीज नहीं है। अगर हम कोई काम के मदद के लिए या फिर भीख मांगने जाते हैं तो वह हमें हट हट करके भगा देते हैं, जिससे हमारे दिल को बहुत ही ठेस पहुंचती है। हमें पता है कि भीख मांगना अच्छी बात नहीं है लेकिन हम चाह करके भी कुछ नहीं कर सकते। हमने जो शुरू से अपने अभिभावकों को यही काम करते हुए देखा है, उसी से हमने भी सीखा है। लेकिन सच बात बताएं दीदी जब लोग हमारे साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं तो हमें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है। पर क्या करें कभी-कभी इसे हम अपनी किस्मत मान कर अपना लेते हैं कि शायद भगवान ने ही हमारी किस्मत में ऐसा लिखा है कि हमें पूरी जिंदगी ऐसे ही जीनी पड़ेगी। साथ ही बच्चों ने यह भी कहा कि काश हमारा भी कोई अस्तित्व होता, पहचान होती तो कम से कम हर एक व्यक्ति के सामने हमें इस तरह खुद को शर्मिंदा तो नहीं होना पड़ता।

छोटी सी उम्र में अमीरी और गरीबी के फर्क को जान चुके है कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर रीता बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

आजकल के युग में अमीरी और गरीबी का भेदभाव एक आम बात है, जिसका सीधा असर बच्चों पर हो रहा है। बच्चे लोगों के इस व्यवहार के कारण बहुत दुखी हैं। जब हमारे बालाकनामा रिपोर्टर आंचल ने लखनऊ में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिले और इस बारे में उनसे बातचीत की। बातचीत करने के दौरान उन्होंने पूछा कि आप सभी पढ़ाई करते हो? बच्चों ने बताया कि हां हम सब पढ़ाई करते हैं और हम पढ़ लिखकर कुछ करना चाहते हैं। वैसे तो हमारे सपने बहुत बड़े बड़े हैं और हम भी पढ़ लिखकर कुछ बनना हैं। हम लोग किस हालात में अपना जीवन यापन कर रहे हैं, यह तो हम ही जानते हैं। हमारे पास चाहे कपड़ा हो या न हो, खाना हो या फिर भूखे पेट सोना पड़े लेकिन गुजारा तो करना ही पड़ेगा। बच्चों ने बताया कि हमारे ऊपर अमीरी गरीबी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि हमारे लिए कुछ भी करना और सोचना असंभव हो गया है। यह बहुत ही विचित्र बात है कि जिस उम्र में हम लोग एक सीट के लिए क्लास के दूसरे बच्चों से लड़ाई करते थे और इसी उम्र के बच्चे आजकल अमीरी और गरीबी में क्या फर्क होता है उसको जान चुके हैं। इसका उन पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा है।

घर से बेघर हुए सैकड़ों कामकाजी बच्चे और उनके घरवाले

बातूनी रिपोर्टर जेनब व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

आज के इस भागम भाग में हर किसी को सारे काम करने की बहुत जल्दी होती है इस जल्दबाजी से उनको कितना बड़ा नुकसान हो सकता है उसके बारे में उन्हें कोई अंदाजा नहीं होता । ऐसे ही एक दिन हमारे बालकनामा के पत्रकार घसोला के दौरे पर गए थे । वहाँ जाकर उन्होंने कई कामकाजी बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि हमारे यहां पर 80 से ज्यादा झुग्गियां है और यह रोड के बिल्कुल नजदीक पर है। हमारी जिंदगी बहुत ही अच्छी चल रही थी परंतु एक दिन ऐसा आया कि सरकार ने हमारी सारी झुग्गियां तोड़ने का फैसला लिया और हमारी सारी झुग्गियां तोड़ द। हमने आवाज उठाई पर, हमारी आवाज बड़े अधिकारियों ने दबा दी तथा बड़े अधिकारी कहते कि यहाँ रहना गैरकानूनी है तुम यहाँ नहीं रह सकते जाओ यहाँ से भाग जाओ और गाली गलौज भी करते। ज्यादा बोलो तो पुलिस बुलाकर मारपीट भी करते। इसी कारण हम सबको अपनी झुग्गियां छोड़ कर किसी और जगह जाना पड़ा। हमारे कुछ साथियों ने तो किराए के रूम ले लिए तथा कुछ साथिया दूसरी जगह चले गए तथा फिर भी हमने सरकार से बातचीत करने की कोशिश करी परंतु किसी ने भी हमारी मदद करने की कोशिश नहीं करी । हमें बहुत ही बुरा लगता है कि हम भी भारत में रहते हैं परंतु हमारा कोई भी अधिकार नहीं है, कोई भी हमारा घर तोड़ देता है, कोई भी हमें मारता है और फिर हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी जाने पर मजबूर कर देता है। मेरी आपसे विनती है कि अगर हमें भी अच्छी जगह रहने का अधिकार मिले तो हम भी कुछ पढ़ लिख कर बन सकते हैं और हमारे समाज का नाम भी उठा सकते हैं परंतु ऐसे समाज का नाम उठाने का क्या फायदा जो हमारे हित के लिए भी ना लड़े।

टैटू छपवाना मौत को न्योता देना

बातूनी रिपोर्टर बबीता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे भारत में ऐसे ऐसे कार्य है जिन कार्यों को करने में एवं करवाने में बड़े व्यक्ति लोग एवं बच्चे काफी शौक रखते हैं, परंतु क्या आप यह जानते हैं की शौक पूरा करने के लिए कभी-कभी हम अपनी जान को न्योता देने के लिए तैयार हो जाते हैं। हमारे पत्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कर रहे थे, और मीटिंग के दौरान बच्चों को मनोरंजन के लिए खो -खो खेल खिला रहे थे, खो -खो खेल खेलने के दौरान हमारे पत्रकारों की नजर एक बच्चे के गर्दन की और पड़ी और देखा कि बच्चे की गर्दन पर एक टैटू छपा हुआ था, और वह टैटू से बच्चे की गर्दन की खाल जल चुकी थी। यह जानकारी को विस्तार से जानने के लिए उन्होंने बालक से पूरी जानकारी प्राप्त कि, बालक ने बताते हुए कहा," भारत में अनेक भारतवासी अपनी जान से ज्यादा अपनी माँ को प्यार करते हैं और जब कभी बच्चे अपने परिवार के साथ बजार एवं मेले में जाते हैं तो उधर कई प्रकार के टैटू नजर आते हैं, जो टैटू शरीर में छापे जाते हैं। टैटू दो तरीकों से छापे जाते हैं एक लकड़ी के द्वारा और एक मशीन की सुई के द्वारा। जब मैं भी मेले में गया और मैंने वहां पर लकड़ी से बनाया जा रहा टैटू अपनी गर्दन पर मां के नाम से छपवा लिया। टैटू 50 से 100 तक के दामों में छापे जा रहे थे और मैंने 50 में टैटू छपवा लिय। टैटू छपवाने के 5 दिन बाद मैंने शीशे में इस टैटू को देखा तो वह जल चुका था और गर्मी के कारण पसीने से वह टैटू जलन भी दे रहा थ।" उस टैटू में तेजाब केमिकल मिला हुआ था। जिस कारण शरीर की खाल को जला दिय।टैटू से होने वाले नुकसान के बारे में पत्रकारों ने सभी बच्चों को विस्तार से बताते हुए कहा की शरीर पर टैटू बनवाने से काफी नुकसान पहुंचते हैं। टैटू के इंक में एलुमिनियम और कोबाल्ट होता है, जोकि हमारी स्किन के लिए काफी नुकसानदायक होता है शरीर पर टैटू छपवाने से स्किन और मांसपेशियों को काफी नुकसान पहुंचता है। कुछ टैटू की डिजाइन ऐसे भी होते हैं जिसमें सुई आपके शरीर की गहराई में चुभ जाती है, टैटू बनवाते समय लोगों को इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिए टैटू से आप सोराइसिस नामक बड़ी बीमारी का शिकार भी हो सकते है। बता दें कि एक व्यक्ति पर इस्तेमाल की गई सुई का दूसरे इंसान पर इस्तेमाल करने से त्वचा संबंधित रोग का खतरा रहता है और टैटू बनवाने से स्किन कैंसर का खतरा भी बढ़ जाता है। अगली बार से टैटू बनवाते समय इस बात पर जरूर ध्यान दें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

शौचालय ना होने के कारण परेशान सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर ममता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जब हमारे बालकनामा के पत्रकारों ने लखनऊ के लवकुश नगर बस्ती के बच्चों के साथ बात चित करने गए तो वहाँ हमारी बातूनी रिपोर्टर ममता ने बताया की "दीदी यहाँ पर एक भी शौचालय नहीं बना है"। यहाँ पर एक बहुत बड़ा कूड़े का ढेर बना है हम सभी को शौच के लिए वहीं जाना पड़ता है। जब भी बारिश होती है तो उस कूड़े से ढेर सारा पानी निकलता है जो की हमारे घरों के सामने भर जाता है। जिसके कारण हमें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और हम लोग शौच के लिए कहीं और जा भी नहीं सकते । छोटे बच्चों तथा आदमियों को तो दिन में जाने में कोई दिक्कत नहीं होती। बस हम लड़कियों और औरतों को ही दिन में जाने से दिक्कत होती है। जिसके कारण हमें रात में शौच के लिए जाना पड़ता है और अगर हम दिन में शौच के लिए जाते है तो जाहाँ हम शौच के लिए जाते हैं वहाँ काफी लोग ताश खेल रहे होते हैं या तो पतंग उड़ाते रहते है। जब हम उन लोगों से बोलते हैं की यहाँ से हट जाओ तो वे लोग नहीं सुनते हैं और वापस खेलने लगते है। इसी कारण हम दिन में शौच के लिए नहीं जा पाते और हमें रात में शौच के लिए जाना पड़ता है जिसके कारण हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अब हम शौच के लिए जाए तो जाए कहाँ?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आधी हकीकत, आधा फसाना

ब्यूरो रिपोर्ट

आजकल बच्चा चोरी की खबर बहुत तेजी से वायरल हो रही है।उत्तर प्रदेश के अलग अलग जिलों से बचे चोरी हो रहे हैं। यह खबर मोबाइल के द्वारा फैलाई जा रही है। मोबाइल में अलग अलग वौइस- नोट ,वीडियो और फोटोज के माध्यम से इस तरह का ब्रह्म फैलाया जा रहा है की कुछ बच्चों को पकड़ के उनकी किडनी,लिवर फेफड़े आदि निकल रहे हैं। इन्हीं सब बातों की वजह से कई जगहों पर बच्चों की शिक्षा एवं विकास बाधित हो रहा है। क्योंकि इन सब बातों को सुनकर अभिभावकों में काफी डर है। इसी वजह से वे अपने बच्चों को अकेला कहीं भी जाने नहीं दे रहे हैं। हालांकि इन खबरों के ऊपर सरकार ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। और उत्तर प्रदेश पुलिस के आला अधिकारियों ने इस तरह की किसी भी खबर को या अफवाह को मानने से इनकार किया है। साथ ही लोगों से भी आग्रह किया है। कि वह इस तरह की अफवाह पर ध्यान ना दें। और अगर ऐसा कोई संदिग्ध दिखे तो तुरंत पुलिस को खबर दे। कानून अपने हाथ में ना लें। ऐसा ही डर का माहौल नोएडा स्थित नन्हे परिंदे वेन पर पढ़ने आने वाले बच्चों में भी देखा गया है।

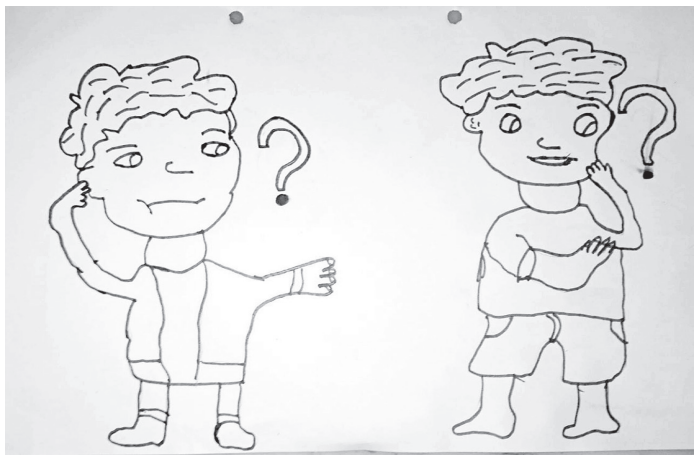

जब हमारे रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की तो बच्चों के द्वारा पता चला कि उनके एरिया में भी कई बच्चे गायब हो चुके हैं। लेकिन फिर जब हमारे रिपोर्टर ने इस बात की तह तक जाने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया। कि उन्होंने यह बात किसी और से सुनी है। और किसी और ने बताया कि उसने भी किसी और से सुनी है। लेकिन आंखों देखा किसी को कुछ नहीं पता साथ ही कुछ बच्चों ने मोबाइल पर आने वाली वीडियो और ऑडियो के जरिए इस बात का पता लगने के बारे में भी बताया। इसीलिए रिपोर्टर ने सभी बच्चों को समझाया कि ऐसा कुछ भी नहीं है। और आप सतर्क रहें कभी भी कहीं जाए और आपको कुछ भी ऐसा संदिग्ध लगे तो जोर-जोर से चिल्लाएं और पब्लिक इकट्ठी कर लें जिससे कि आपको कोई भी किसी भी प्रकार का नुकसान न पहुंचा सके इसके साथ ही बच्चों को यह भी बताया गया कि बिना वजह कहीं भी ना घूमे क्योंकि इन दिनों जिस तरह का माहौल बच्चों के प्रति बना हुआ है। उसकी सच्चाई क्या है? यह किसी को नहीं पता लेकिन सतर्कता ही हमें और हमारे आसपास के बच्चों को सुरक्षित रख सकती है। इसके साथ ही नन्हे परिंदे बस में पढ़ाने वाले टीचर मोबिलाइजर आदि का भी नंबर बच्चों के साथ साझा किया गया। जिससे कि बच्चे पॉइंट पर आने से पहले एक बार कॉल करके ही अपने घरों से बस पर पढ़ाई के लिए आएं।

खराब सब्जी खाने को मजबूर कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर हिमांशु व रिपोर्ट किशन

आज के समय में महँगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।पहनने की वस्तुओं से लेकर फल और सब्जियों पर महँगाई का असर दिख रहा है। सब्जियों के बढ़ते दामों की वजह से आम पब्लिक महँगी सब्जी खरीद पा रहे है या नही।यही जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे पत्रकार नोएडा की एक ऐसी बस्ती में दौरा किया जहाँ पर अधिकतर बच्चे एवं बड़े कबाड़ उठाने का काम करते है।हमारे पत्रकारों ने कामकाजी बच्चों से बढ़ती महँगाई के विषय में चर्चा की। कामकाजी बच्चों ने बताते हुए कहा की कुछ महीने पहले 100 रुपए की सब्जी हफ्ते भर चलती थी परंतु अब 300 रुपए की सब्जी भी हफ्ते भर चलाना बहुत मुश्किल हो रहा है। पत्रकारों ने बच्चों से यह जाना कि इतनी महँगी सब्जी होने के कारण पर भी आप सब्जी का बंदोबस्त कहां से करते हैं? 14 वर्ष परिवर्तित कामिनी ने बताते हुए कहा झुग्गी बस्ती में अधिकतर बच्चे कबाड़ छाटने का कार्य करते है। बस्ती से 3 किलोमीटर दूरी पर एक सब्जी मंडी ह। जहाँ पर अधिकतर कबाड़ हम बच्चों को देने के लिए मिल जाता है चाहे वह गत्ता हो या प्लास्टिक हो आदि हमें मार्केट में जैसा भी कबाड़ मिलता है हम वैसा उठाकर ले आते हैं और मार्केट में जो लोग सब्जी की दुकान लगाने का काम करते हैं अधिकतर सब्जी दब जाती है। उसमे से कुछ सब्जी आधी खराब और आधी सही होती है। सब्जी जैसे आलू प्याज टमाटर लौकी कद्दू आदि सब्जी को उठाकर एक पन्नी में भरकर हम बच्चे अपने घर की ओर ले आते हैं और वह सब्जी को छाटते जो कुछ सब्जी खराब होती उन सब्जी को काट कर गाय को खिला देते और जो जो सब्जी सही होती वह सब्जी को धूल के घर में बना लेते हैं ऐसे ही अधिकतर हम बच्चों के घर का सब्जी का खर्चा बच जाता है।

महंगाई बनी समस्या

बातूनी रिपोर्टर रिया व रिपोर्टर किशन

आज के समय में रसोई गैस का दाम 1100 रुपए है। क्या आप यह बात जानते हैं? इतनी महंगी रसोई गैस को आम आदमी खरीद पाएगे या नहीं ?परंतु वह इस गैस का यदि कम प्रयोग भी कर रहे हैं तो वह किस प्रकार से भोजन बनाने में किस चीज का प्रयोग कर रहे हैं? 13 वर्ष परिवर्तित नाम अर्जुन जोकि नोएडा सेक्टर 62 में झुग्गी बस्ती के पास रहते हैं अर्जुन ने बताते हुए कहा," इस स्थान पर पूरी झुग्गी बस्ती के व्यक्ति लोग गैस का प्रयोग तो करते हैं, परंतु कम गैस का प्रयोग करते हैं क्योंकि गैस के दाम वर्तमान में काफी ऊंचाई तक पहुंच गए हैं, कि आम आदमी गैस सिलेंडर लेने में भी डरने लगा है यदि वह इतने पैसों का गैस सिलेंडर लेंगे तो घर का घरेलू सामान कैसे लेकर आएंगे ?इस कारण झुग्गी बस्ती में अधिकतर लोग दूर-दूर जंगलों जैसे स्थानों पर जाकर सूखी लकड़ियां काटकर वह बिन के लेकर आते हैं। झुग्गी बस्ती में अधिकतर माता पिता फैक्ट्रियों में भी काम करते हैं और फैक्ट्रियों में पाक और पेड़ पौधे अधिकतर है यदि वह पेड़ पौधे सूख गए हैं तो उन पेड़ पौधों को काट कर लेकर आ जाते हैं," परिवर्तित नाम पिंकी ने बताते हुए कहा," इस स्थान पर झुग्गी बस्ती के ऊपर से लाइट के तार भी जा रहे हैं और नीचे पेड़ लगे हुए हैं, अधिकतर ऐसे पेड़ है जो हफ्ते 2 हफ्ते में बड़े हो जाते हैं और वह उन लाइट के तारों के ऊपर तक बढ़ जाते हैं जिस पेड़ में करंट आने लगता है और वह पेड़ हमें नुकसान भी पहुंचाने लगते हैं, इसी कारण हम उन पेड़ को उतनी ऊंचाई से काट भी देते हैं, ताकि वह पेड़ करंट ना मारे और कटे हुए पेड़ों को हम चूल्हे में जलाने के लिए इस्तेमाल कर लेते हैं। जब हम बच्चे भरे जंगलों में लकड़ी लेने के लिए जाते हैं,कुछ ऐसी लकड़ी होती है जो सूखी होती है और वह हमें गिरी हुई नजर आ जाती है परंतु यदि कोई बड़ा पेड़ सूखा हुआ है और वह हमारे इस्तेमाल मैं आ सकता है तो हम उस पेड़ को रिक्शे से लेकर जाते हैं और उस रिक्शे वाले को भी हमें थोड़ी लकड़ी देनी पड़ती है क्योंकि उसने रिक्शा दिया है हमें, जब हम छोटी-छोटी लकड़ी लेकर आते हैं वह लकड़ी हम सर पर रख कर लाते हैं और सर पर लेकर आते हैं तो सर दर्द करने लगता है और फोड़े भी निकलने लगते हैं। बड़े पेड़ जैसी लकड़ियों को घर पर लाकर कुल्हाड़ी से भी काटना पड़ता है जब हम बच्चे कुल्हाड़ी से लकड़ी को काट रहे होते हैं तब हमारे हाथ में दर्द उभरने लगता है और हाथ में छाले भी पड़ जाते हैं। और जब कभी-कभी बारिश आती है तो हमारी लकड़ियां बाहर रखी होती है ,और वह भीग जाती है फिर हम गैस का प्रयोग करते हैं। हम बच्चों का कहना है जल्द से जल्द महंगाई अधिक कम हो जाए ताकि हम आसानी से गैस का प्रयोग कर पाए।

टेक्नोलॉजी का सही इस्तेमाल न करने की भरपाई पड़ी महंगी

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व लकनावा रिपोर्टर आंचल

आजकल डिजिटल का जमाना हैं और हर कार्य डिजिटली किया जाता हैं। जहाँ इस टेक्नोलॉजी के बड़े फायदे हैं वहीँ दूसरी और इसका सही तरीके से इस्तेमाल न करने पर इसके बड़े खतरनाक परिणाम हो सकता है। आजकल के बच्चे या यूँ कहे टीनएजर इन चीजों को नहीं समझते। उन्हें लगता हैं की अगर उन्हें एक स्मार्टफोन चलाना आता हैं तो उन्हें दुनिया की साड़ी चीजें चलानी आती हैं। टेक्नोलॉजी की चीजें सीखने की हैं और इन्हे जरूर सीखना चाहिए क्यूंकि आने वाले समय में टेक्नोलॉजी के बिना शायद ही कोई काम संभव होगा। लेकिन इनका सही इस्तेमाल करना भी आना चाइए क्यूंकि आजकल के बच्चे फोन के माध्यम से न जाने किन किन वेबसाइट पर और जाते हैं और क्या क्या देखते व डाउनलोड करते हैं। इन्ही सबको देखकर प्रेम प्रसंग में पड़ जाते हैं। जबकि उन्हें प्रेम का अर्थ भी नहीं पता और यह एक बहुत बड़ा मुद्दा हैं।क्यूंकि आज के समय में फोन होना कोई बड़ी बात नहीं हैं। अब हम आपको यह सब बताने का कारण बताते हैं। नोइडा में स्तिथ हरकेश नगर में परिवर्तित नाम राम भाई रहा करती थी।

जिसने जाने अनजाने में 14 वर्ष की कम उम्र में टेक्नोलॉजी की चमक धमक देख कर वह एक लड़के के प्रेम प्रसंग में आ गई। हाल ही में वह 18 साल की हुई हैं। चौंकाने वाली बात तो यह हैं की जिस आदमी से उन्होंने शादी की थी। उस व्यक्ति ने उन्हें छोड़ दिया है और राम भाई अब मानसिक रूप से पीड़ित है। कभी वह अपने हाथ चाकू से काटती तो कभी आपने मुँह नोचती। उनकी लड़की भी हैं जिसकी उम्र 15 दिनों से कम हैं उसका ध्यान उसके पिता एवं उसके छोटे भाई बहन रखते हैं। हमारा इस स्टोरी को आपको बताने का मकसद यही हैं की टेक्नोलॉजी को टेक्नोलॉजी की तरह ही ले न की उसे देखकर आप खुद को कोई अभिनेता समझने लगे। क्योंकि रील और रियल जीवन बहुत ही अलग होता है इन टेक्नोलॉजी की चीजों को अपने भविष्य को आगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करें। ना कि अपने आप को प्रेम प्रसंग जैसी अजीब सी बीमारी में डालने के लिए।

वस्त्र खरीदने तक के पैसे नहीं जोड़ पाते हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालक नामा रिपोर्टर किशन

जब माता पिता अपने बच्चों को कपड़े नहीं दिला पाते तो उनके बच्चे बिना कपड़ों के रेड लाइट पर कपड़े और पैसे माँगने के लिए पहुंच जाते है। हमारे पत्रकारों ने नॉएडा की रेड लइटों पर पैसे माँगते हुए कामकाजी बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने यह देखा की उनके बदन पर कपड़े ही नहीं थे। इस विषय में

अधिक जानकारी के लिए जब उन्होंने बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने बताते हुए कहा की हमारे माता पिता साल में एक बार ही कपड़ दिलाते है जो 3-4 महीनों में ही फट जाते हैं। माता पिता के पास ज्यादा आमदनी न होने के कारण हमें ज्यादा कपड़े नहीं दिला पाते। इसलिए हमे यहाँ बिना कपड़ों के आना पड़ता है। हम बच्चों को सुबह से लेकर शाम तक डेढ़ सौ रुपये मिल जाते हैं और कई बार लोग हमें कुछ कपड़े भी दे देते हैं तो वे कपड़े हम इस्तेमाल कर लेते हैं। जब गर्मी में हमारे पास कपड़े नहीं होते तो हमें गर्मी का ज्यादा सामना नहीं करना पड़ता हैं क्यूंकि खुले बदन में हवा लगती रहती हैं। परंतु बढ़ते तापमान के कारण हमारे शरीर पर घमोरियां हो जाती है। जो हमें पैसे मिलते हैं हम उनसे कपड़े नहीं खरीद पाते हैं क्यूंकि वो पैसे घर खर्च में इस्तेमाल हो जाते है।

अंकल बने भगवान, साधना की करी रक्षा

ब्यूरो रिपोर्ट

गलती तो हर किसी से होती है चाहे वह भगवान हो, चाहे व्यक्ति या बच्चा क्यों ना हो, परंतु अधिकतर घरों में बच्चों को छोटी छोटी बातों के लिए इतना टॉर्चर और इतना मारा जाता है कि वह गलती करने से 100 सोचते हैं। कुछ बच्चों के साथ दुर्घटना भी होती है परंतु वह बच्चे इतने डर जाते हैं कि वह अपनी छोटी छोटी बात घर तक नहीं पहुंचने देते यदि घर पर यह बात पता चली तो हमारा क्या होगा यह सोचकर बातों को वहीं पर दबा देते हैं। बालकनामा के पत्रकारों ने पश्चिम दिल्ली के जखीरा गांव में दौरा किया जिस दौरान पत्रकारों ने 14 वर्ष परिवर्तित नाम साधना से बातचीत किया और उनकी समस्याओं को जानने की कोशिश की परंतु साधना इतनी डरी हुई थी कि वह अपनी समस्याओं को बताने से काफी झिझक रही थी। पत्रकारों ने साधना का हौसला बढ़ाते हुए विस्तार से समस्याओं पर चर्चा किया," साधना ने बताते हुए कहा भैया हम रेलवे पटरियों के पास झुग्गियों में रहते हैं, और इस स्थान पर 15 सौ झुग्गियां स्थित है और इन झुग्गी बस्तियों में अधिकतर किन्नरों का भी वास है इस स्थान का माहौल काफी ज्यादा खराब है इस स्थान से लोग आने जाने में भी डरते हैं, परंतु हमारा यही एक रास्ता है इसीलिए हमें हिम्मत करके इस स्थान से रोज आना जाना पड़ता है, एक दिन मैं अकेली इंद्रलोक मार्केट सब्जी लेने के लिए जा रही थी, घर के कुछ दूर आगे चलकर रस्ते में 2 किन्नरों ने मुझे पकड़ के और मुँह दबा कर एक रिक्शे में बिठा लिया और मेरे साथ अश्लील हरकतें करने की कोशिश की उस समय उन्होंने मेरा इतना तेजी मुँह दबा रखा था, कि छुटाए ना छूट रहा था। और रिक्शे को तेज तेज से

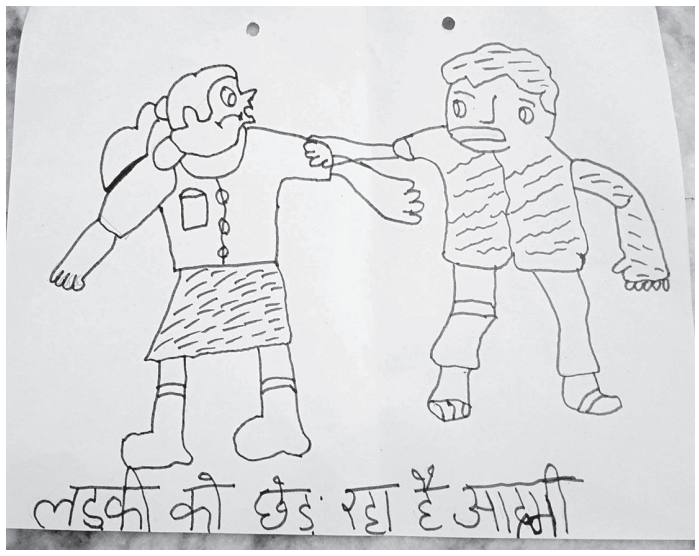

भगा कर ले जा रहे थे। सामने से एक अंकल आ रहे थे और मैंने किन्नर के हाथ में काट के मुँह से हाथ हटवाया और उन अंकल को चिल्लाते हुए कहा, कि मुझे बचाओ मुझे बचाओ और उन अंकल ने मुझे बचाने में काफी सहायता की और मैंने अपनी बीती हुई बात उन अंकल को विस्तार से बताई कि यह मुझे जबरदस्ती पकड़कर और मुँह दबाकर ले जा रहे थे। यह बात सुनने के बाद अंकल ने शोर मचा कर दो चार व्यक्तियों को इकट्ठा किया और पुलिस पर कॉल करके किन्नरों के खिलाफ कंप्लेंट करवाई और उनको पुलिस के हवाले किया," साधना इतनी डर गई थी कि यह बात घर तक नहीं पहुंचने दी और इस स्थान पर रोजाना छोटी एवं बड़ी लड़कियों के साथ यह घटनाएं होती है, परंतु कुछ लोग बच्चों को पकड़ के ऐसे स्थान पर ले जाते जहां पर कोई ना देख पाए और उन बच्चों के साथ अश्लील हरकतें करते। बच्चे डर के कारण घर पर यह बात नहीं बताते यदि वह यह बात बताएंगे तो पिटाई खानी पड़ेगी और घरवालों की बदनामी भी होगी। इस कारण बच्चे इस बात को दबा देते हैं।

माताजी ना होने के कारण रोशन के ऊपर आई घर की जिम्मेदारी

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा के पत्रकारों ने नोएडा की कुछ झुग्गी बस्ती में कामकाजी बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया। इस मीटिंग में 50 से 55 बच्चों ने भाग लिया और एक-एक करके बच्चों ने अपनी समस्याओं को रखा," 13 वर्ष परिवर्तित नाम रोशन ने बता की वर्तमान में रोशन सेक्टर 115 में किराए के कमरे मैं अपने पिताजी के साथ रहता है। रोशन के घर में 4 सदस्य हैं एक रोशन दो छोटी छोटी बहन और एक पिताजी। जिस कमरे में हम किराए पर रहते हैं उस कमरे का किराया 3000 महीने का जाता है और घर में मेरे पिताजी बेलदारी के कामकाज पर जाते हैं। परंतु सुबह से लेकर शाम तक काम करने के बाद जो 400 आते हैं पिताजी उन पैसों की दारू पी जाते हैं और घर में 1 तक नहीं देते! महीने पूरा होते ही मकान मालिक तुरंत किराया लेने के लिए आ जाता है परंतु घर में एक भी पैसा ना होने के कारण उन्हें कहना पड़ता है कि हम आपको जल्द ही किराया दे देंगे, यदि किराया समय पर नहीं पहुंचता तो मकान मालिक कमरा खाली करने की धमकी भी देता, इस कारण मुझे भी एक होटल में काम करना पड़ा वर्तमान में मैं सुबह के 8:00 बजे से लेकर रात के 10:00 बजे तक होटल में काम काज करता हूं और मुझे महीने के 6000 मिलते हैं। मुझे लोगों के खाना खाने के बाद बर्तन धुलने पड़ते हैं और जो काम करने के बाद 6000 महीने में मिलते है। उन पैसों से घर का खर्चा भी चलाता और अपनी छोटी छोटी बहनों का भी खर्चा और उनकी देखभाल इन्हीं पैसों से करता," पत्रकारों ने यह भी जाना कि उनकी माताजी कहां है? रोशन ने बताया," वर्तमान में हमारी माता जी इस दुनिया में नहीं है 6 साल पहले उनकी मृत्यु हो चुकी है। जब माताजी थी तब भी पिताजी शराब पीते थे और माता जी को परेशान करते थे और अचानक से उनकी तबीयत खराब हो गई और हमारे पास इलाज करवाने तक के पैसे नहीं थे इस कारण उनकी मृत्यु हो गई और सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई।

बच्चों ने निभाया दोस्त होने का फर्ज

बातूनी रिपोर्टर रीता व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

पढ़ाई वह मार्ग है, जिस पर चलकर हर एक व्यक्ति भविष्य में उन्नति कर सकता है। यह तो आपको भी पता है कि अगर पढ़ाई के महत्त्व को जो इंसान जितनी जल्दी समझ लेता है, उसके लिए उतना ही अच्छा होता है। कुछ यही हाल हमारे लखनऊ में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों का है उनका यह कहना है कि हमें पढ़ाई को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। इस विषय पर जब हमारी लगातार बच्चों से बातचीत हुई तो यह बात सामने आई कि 2019 में आई हुई महामारी ने जो हाल किया था उससे लोग काफी डर चुके हैं, खासकर सड़क एवं कामकाजी बच्चे। उनका यह कहना है कि महामारी में सबका कुछ ना कुछ बर्बाद हुआ है ,लेकिन सबसे ज्यादा जिसकी बबार्दी हुई है वह है हमारी पढ़ाई। जिसमें हमारे लगभग 1- 2 साल बर्बाद हो गए। इसीलिए अब हम लोगों ने यह प्रयास करना शुरू किया है कि अब हम लोग अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें और साथ ही जो बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़ चुके हैं, उनको भी हम अपने साथ लेकर स्कूल जाएं और उनको पढ़ाई के मार्ग पर लेकर आए साथ ही पढ़ाई का महत्व है, बता सके ताकि हमारे साथ उनका भी भविष्य एक सुंदर, उज्जवल हो सके।

क्या प्रज्ञा बन पाएगी डॉक्टर?

बातूनी रिपोर्टर मासूमा, बालकनामा रिपोर्टर असलम

इस भागमभाग में दुनिया के उसी व्यक्ति की ही कीमत है जिसके पास धन ,दौलत मकान ,घर आदि हैं। यह घटना हमारे पत्रकार कन्हाई विलेज के दौरे पर गए थे। वहाँ उन्होंने देखा कि कुछ लड़कियां एक किराने की दुकान में काम कर रही थ। उनमे से एक का नाम प्रज्ञा था जिसकी उम्र 8 साल और सोनिया जिसकी उम्र 15 साल थी हमारे पत्रकारों ने उनसे बात करने की कोशिश करी तब उन लड़कियों ने बताया की जी मुझे मेरी छोटी बहन को पढ़ाना है मेरे घर में मेरे पिताजी बहुत दारु पीते हैं और मेरी माता जी की मृत्यु हो चुकी है।

इसी कारण मुझे इस दुकान को चलाना पड़ता है जिससे में अपनी बहन की पढ़ाई का खर्चा निकालती हूं। मैं खुद पढ़ नहीं सकती क्योंकि मुझे अपनी छोटी बहन को पढ़ाना और मैडम मेरा सपना है कि मेरी बहन को मैं बहुत आगे तक पढ़ाऊंगी फिर हमारे पत्रकारों ने उनसे पूछा कि अगर आपको और आपकी छोटी बहन को एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगी तो वह बोली मुझे बड़े होकर डॉक्टर बनना है।

अधिक बारिश होने के कारण परेशान सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्ट अंजली व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोग जानते हैं कि कई दिनों से कितनी बारिश हो रही है और इस बारिश के कारण हम लोगों का बहुत कुछ नुकसान हुआ है। लखनऊ में बालकनामा पत्रकारों ने उनकी समस्या जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि कई दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण हमें बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ा रहा है क्योंकि हमारी झोपड़ी के ऊपर तिरपाल नहीं पड़ा है, जिसके कारण जब भी बारिश होती है तो हम लोगों के घर के अंदर पानी भर जाता है और राशन पानी सब खराब हो जाता है। हम लोगों के कपड़े बिस्तर सब भीग जाते हैं। जिसके कारण बहुत ज्यादा दिक्कत होती है। एक तो हमारे अभिभावक बहुत मुश्किल से राशन भर पाते हैं ऊपर से बारिश की वजह से सारा राशन खराब हो जाता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बेटियां है सुरक्षित तो भारत है सुरक्षित

बातूनी रिपोर्टर -खुशी, बालकनामा रिपोर्टर-असलम

जैसा कि आपको पता ही होगा कि भारत में अगर किसी पुरुष की उम्र 21 वर्ष से अधिक हो और महिला की उम्र 18 वर्ष से अधिक हो तो दोनों का विवाह हो सकता है। परंतु अगर पुरुष की उम्र 21 वर्ष से कम हो और और महिला की उम्र 18 वर्ष से कम हो तो विवाह नहीं हो सकता। यह बहुत बड़ा अपराध है। जब हमारे पत्रकार बादशाहपुर के दौरे पर गए तो वहाँ बच्चों के माध्यम से उन्हें पता चला कि वहाँ एक लड़की है जिसका नाम मुस्कान है और उसकी उम्र 15 साल है। उसके घरवाले उसकी शादी एक 24 वर्षीय पुरुष से जबरदस्ती करवाना चाहते है। हमारे पत्रकारों ने बच्चों से पूछा कि मुस्कान क्या करती है तो उन्होंने बताया कि भैया मुस्कान सातवीं कक्षा में पढ़ती है और वह पढ़ने में बहुत अच्छी है। उसके स्कूल के टीचर्स उसे बहुत अच्छे से जानते हैं क्योंकि वह पढ़ाई में अच्छी है और वह खो-खो भी खेलती है। उसने खो -खो में अपने स्कूल के लिए स्टेट लेवल मैच में सिल्वर मेडल जीता था और मुस्कान अपनी स्कूल टीम की कैप्टन भी थी। परंतु उसके घर वाले उसे पढ़ने देना नहीं चाहते। हर वक्त कहते रहते कि पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है, तुम्हारी शादी करवा देंगे। इसलिए मुस्कान एक बार घर से भाग भी गई थी। फिर जब मुस्कान मिली तो उसके घर वालों ने उसकी शादी 5 दिनों के अंदर अंदर करवा दी। हमारे पत्रकारों ने बच्चों को सलाह दी कि अगर आपके आस पास कोई भी पुरुष या महिला की आयु 21 तथा 18 से कम हो तो आप सभी महिला हेल्पलाइन नंबर 1091 पर कॉल करें। बाल विवाह एक अपराध है, जिसमें शामिल होने वाले हर व्यक्ति को 2 साल की जेल तथा एक लाख का जुमार्ना हो सकता है।

बिना पार्क के बच्चे हैं उदास

बातूनी रिपोर्टर- मासूमा, बालकनामा रिपोर्टर-असलम

जैसा की आप सभी ने देखा ही होगा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत ही परिश्रमी होते है। हमारे पत्रकार पंडा के दौरे पर गए थे। वहाँ पर उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे कड़कती धूप में खेल रहे थे। हमारे पत्रकारों ने उन बच्चों से बात करने की कोशिश की तब उन सभी बच्चों ने बताया कि हमारे यहाँ कोई भी पार्क नहीं है एक पार्क है वह भी एक फ्लैट के अंदर है जो कि प्राइवेट पारक है। जहाँ हम बच्चों को घुसने नहीं दिया जाता हैं। हम बच्चे जब घुसने की कोशिश करते हैं तो गार्ड या कुछ बड़े-बड़े लोग हमें डांटने लगते है। कभी-कभी तो हम छुप कर भी चले जाते हैं। पर वह हमें डांट कर तथा कुत्ते को छोड़कर हमें पार्क से भगा देते हैं। इसलिए हमें इतनी कड़कती धूप में खेलना पड़ता है और हम कई बार सोचते हैं कि देश के लिए गोल्ड मेडल लाएंगे।

स्कूल नहीं काम पर भेजते हैं अभिभावक

घर की और ग्यारह दुकानों की जिम्मेदारी अकेले उठा रही है नन्ही बच्ची

बातूनी रिपोर्टर नूरजहां व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का यह दुर्भाग्य है कि जैसे ही कोई भी बच्चा नौ से दस साल का होता है तो उसे पढ़ने की बजाय बाल मजदूरी की तरफ धकेल देते हैं। जिससे एक बच्चे का भविष्य बद से बदतर हो जाता है। कुछ यही हाल लखनऊ के लवकुश नगर की आसामी बस्ती में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों का भी है। जब बालकनामा पत्रकार ने विजिट के दौरान बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो एक बच्ची ने बताया कि, दीदी मैं अपनी मम्मी के साथ सुबह सुबह ही घरों में काम करने के लिए निकल जाती हूं। जिसके कारण मुझे पढ़ाई लिखाई करने का समय नहीं मिल पता। यह बच्ची पढ़ना तो चाहती है, लेकिन बाहर के कामों में फस कर वह पढ़ाई नहीं कर पाती है। इसी प्रकार एक और बच्ची ने भी बताया कि वह अपनी मम्मी के साथ सुबह जाती हैं और 11 दुकानों में जैसे मेडिकल की दुकान, कपड़ों की दुकान इत्यादि दुकानों में झाड़ू-पोछा करती है। वह सुबह ८ बजे निकलती है और काम करते-करते उसको लगभग दोपहर के 2 बज जाते हैं। फिर घर वापस आकर वह घर का सारा खाना भी बनाती हैं। यह सब देखकर इस बच्ची के दोस्त बहुत दुखी हैं, क्योंकि उनका कहना है कि पहले यह हमारे साथ पढ़ने जाती थी और हमारे साथ खेलती भी थी। लेकिन जब से यह 11 दुकानों में काम करने लगी है, तब से लेकर अब तक यह हमारे साथ नहीं खेलती है और ना ही पढ़ाई करती हैं। बच्चों का कहना है कि, हम मानते हैं कि हम बच्चों के घरों में बहुत सारी समस्याएं है लेकिन कम से कम उनके अभिभावकों को तो यह सोचना चाहिए कि काम कराने के साथ साथ ही पढ़ाई भी हमारे लिए बहुत जरुरी है।

मुक्तियार को पढ़ना है ना कि ठेली लगानी है

बातूनी रिपोर्टर- अंजलि, बालकनामा रिपोर्टर-असलम

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे पत्रकार बादशाहपुर के दौरे पर गए तो उन्होंने बच्चों के माध्यम से जाना कि वहाँ एक लड़का है जिसका नाम मुख्तयार है और उसकी उम्र 12 साल है। वह सातवीं कक्षा में पढ़ता है। उसके घर में उसके पिताजी के ना होने के कारण उसको अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी और वह एक सब्जी का ठेला लगाता है। पत्रकारों ने उन बच्चों से पूछा की वे स्कूल क्यों नहीं जाता है तो उन्होंने बताया कि उसकी माताजी बहुत

बीमार रहती है। मुख्त्यार को घर का खर्चा चलाने के लिए सब्जी का ठेला लगाना पड़ता है। पहले तो उसकी मम्मी खाना बनाने का काम करती थी परन्तु बीमारी के कारण उसकी मम्मी का काम भी छूट गया। इसी कारण मुख्त्यार को अपनी पढ़ाई भी छोड़नी पड़ी और वह सब्जी बेचने का काम करता है। फिर हमारे पत्रकारों ने मुख्त्यार से मुलाकात की और उससे पूछा कि अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे? उसने कहा मैं यह चाहता हूं कि जब तक मेरी मम्मी ठीक नहीं हो जाती तब तक मैं सब्जी बेचूँगा। जैसे ही मम्मी ठीक हो जाएँगी तो मैं फिर से अपना स्कूल में नाम लिखवा कर पढ़ाई करना शुरू कर दूंगा और पढ़ लिख कर एक अच्छा पुलिस ऑफिसर बनूँगा।

आमदनी न होने के कारण सड़कों पर भीख मांगते बच्चे

रिपोर्टर ज्योति

नोएडा की रेड लाइट पर अपने माता पिता के साथ गुब्बारा, टिशू पेपर और पेन आदि बेचने का कार्य करने वाले किशन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मेरे माता-पिता का रेड लाइट पर गुब्बारा कोई नहीं खरीदता है। वह लोग बोलते हैं कि आजकल कोरोना वायरस चल रहा है इसलिए वो हमसे गुब्बारे और भी टिशू पेपर नहीं लेते हैं, जिसके कारण हमारे घर का भी खर्चा भी नहीं चल पा रहा है। अब तो मेरे साथ में मेरे भाई बहन और दोस्तों को भीख मांगकर अपने घर का खर्चा चलाना पड़ता है। बालकनामा पत्रकार ने पूछा कि आप लोग कहां कहां पर भीख मांगने के लिए जाते हो तो बालक ने बताया कि हम ऐसी जगह पर जाते हैं जहाँ पर कोई मंदिर या मेट्रो स्टेशन हो और एक जगह भीख नहीं मांगते। हम घूम घूम के मांगते हैं जिससे हमें ज्यादा पैसे मिलें और हमारे घर का खाना खर्चा चल सके और हम लोग दो टाइम का पेट भर कर खाना खा सके। इस तरह कोरोना वायरस के चक्कर में बच्चों को दर-दर भटकना पड़ता है। पेट पालने के चक्कर में कई लोगों से गाली गलौज सुननी पड़ती हैं।

कबाड़ा बीनने के चक्कर में दलदल में फंस जाते हैं बच्चे

रिपोर्टर किशन

दिल्ली में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत करके पत्रकारों को पता चला कि झुग्गी बस्तियों में बहुत से बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। ये बच्चे जहां रहते हैं उनके घर के सामने एक ऐसा गंदा नाला है जिसमें पूरी बस्ती के लोग कूड़ा डालते हैं और पूरी बस्ती का गंदा पानी भी उस गंदे नाले में जाता है। वह गंदा नाला काफी पुराना हो गया है, जिसके कारण वह अब नाला न रहकर दलदल बन गया है। सड़कों पर कबाड़ा बीनने वाले बहुत से बच्चे कबाड़ा बीनते-बीनते कभी कभी हमारी बस्तियों में भी आ जाते हैं। नाला पूरी तरह से कबाड़े से भरे होने के कारण उन्हें इस बात का पता नहीं चल पाता कि यह दलदल है। इस कारण से इस दलदल में हर कुछ दिन में कबाड़ा बीनने के चक्कर में बच्चे फंस जाते हैं। जब आसपास के लोग उन बच्चों को उस दलदल में फंसते हुए देख लेते हैं तो वे लोग रस्सी या अन्य चीजों की मदद से उन बच्चों को बाहर निकाल लेते हैं। इस दलदल में बच्चे ही नहीं बहुत से जानवर भी फंस चुके हैं। जब लोग उन जानवरों को दलदल में फंसते देखते हैं तो उन्हें भी सभी की मदद से बहार निकाला जाता है। हमारी बस्तियों के बच्चे इस दलदल में कबाड़ा बीनने के लिए बिल्कुल नहीं जाते क्योंकि उन बच्चों को इस दलदल की पूरी जानकारी है, यदि जाएंगे तो उसी में फंस जाएंगे।

क्या हमें पढ़ने का अधिकार नहीं है?

बातूनी रिपोर्टर- सनी, बालकनामा रिपोर्टर- असलम

जैसा कि आपको पता ही होगा हमारे देश में जो व्यक्ति पढ़ा लिखा नहीं होता उसे जिंदगी भर ठोकर खानी पड़ती ह। कुछ ऐसा ही हुआ जब हमारे रिपोर्टर्स सोना चौक के दौरे पर गए थे। जहाँ हमारे पत्रकारों ने सड़क में कामकाजी बच्चों से बात करी तो उन सभी बच्चों ने बताया कि हम सब बच्चे स्कूल में पढ़ना चाहते हैं। परंतु हम अपना एडमिशन स्कूल मैं नहीं करवा पाते है। फिर हमें उन सभी बच्चों ने बताया कि जिस सरकारी स्कूल में वे नाम लिखवाने जाते हैं वहाँ के अध्यापक उनका दाखिला नहीं करते हैं क्योंकि वह टीचर हमारा प्रूफ मांगती है परंतु हमारे पास आधार कार्ड के अलावा कुछ नहीं है और हम टीचर से बोलते हैं कि हमारे पास आधार कार्ड है तो टीचर फिर भी हमारा एडमिशन नहीं करते हैं। हम लोग कोर्ट में जाते हैं तो वकील हमारी सुनवाई नहीं करता और ना ही हमें कुछ भी दस्तावेज बना कर देता है। हमारे में से कुछ बच्चों के माता-पिता वकीलों के सामने हाथ भी जोड़ते हैं। जब जाकर कुछ वकील हमसे ५००० घूस मांगता है प्रूफ बनवाने के परंतु हमारे माता-पिता तो वैसे ही गरीब हैं। फिर वह इतने पैसे कहां से लाएंगे इसलिए हमारा स्कूल में एडमिशन नहीं हो पात। जिस कारण फिर हम सभी बच्चे पढ़ नहीं पात। हमारे पत्रकार ने बच्चों से पूछा की आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे कुछ बच्चे बोले कि हमें डॉक्टर बनना है तो कुछ को पुलिस तो कुछ को आर्मी में जाना है।

बरसात के चार दिन कामकाजी बच्चों पर पड़े भारी

बातूनी रिपोर्टर शाइनी व रिपोर्टर किशन दिल्ली

हम रोजाना सड़कों पर और अपने गली मोहल्लों के आस -पास बच्चों को काम करते हुए जरूर देखते हैं। परंतु वह 1 दिन में कितना कमा पाते हैं और क्या इतने पैसों से उनका गुजारा हो पाता है यह हम नहीं जानते हैं। 7 अक्टूबर से लेकर 10 अक्टूबर तक लगातार बारिश के कारण बच्चों को किन-किन परेशानियों से गुजरना पड़ा, आइए जानते हैं। नोएडा सेक्टर 37 में रह रहे कामकाजी बच्चों से बातचीत के दौरान 14 वर्ष बालिका ने बताया कि हम झुग्गी बस्ती में रहते हैं।

इस झुग्गी बस्ती में अधिकतर बच्चे पैसा मांगना, चटाई, गुब्बारे, खिलौने, गाड़ी के कवर आदि बेचने का काम करते हैं। रोजाना 300 रूपए से लेकर 400 रूपए तक का काम कर लेते हैं और वह पैसे रोजाना घर के घरेलू काम जैसे आटा, दाल, चावल, दूध, चीनी, आदि में खर्च हो जाते हैं। हम सुबह के 8 बजे से आसपास की मार्केट, मेट्रो, रेड लाइट, पर काम करने के लिए जाते हैं।

परंतु लगातार बारिश के कारण हम बच्चे काम पर नहीं जा पाए और हम बच्चों को उधार लेकर घर का खर्चा चलाना पड़ा। अधिकतर बच्चों ने अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों से उधार लेकर घर का खर्चा चलाया। 12 वर्ष बालक ने बताया कि हम ने जितना मूलधन अपने काम में लगाया था वह भी खर्च हो गया। जितना हमने रोजाना सामान बेचकर पैसा कमाया था वह घर के समान में खर्च हो गया था। हमने आस-पड़ोस के लोगों से भी उधार मांगा, परंतु उन लोगों के पास भी नहीं था इस कारण हमें अपना मूलधन भी खर्च करना पड़ा। अब हम भी कर्जा लेकर दोबारा से काम का सामान लेकर आएंगे और फिर से अपने काम की शुरूआत करेंगे।

आर्थिक स्थिति खराब होने की वजह से काम करने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोटर निक्की व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपनी मर्जी से बहार काम करने नहीं जाते हैं। जब तक उनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा खराब नहीं होती तब तक वह बाहर काम करने के लिए मजबूर नहीं होते। घर में खाने की व्यवस्था करने के लिए मजबूरी में उन्हें काम पर निकलना पड़ता है। यह छोटे-छोटे बच्चे दिन रात सिर्फ दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करने के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। इतनी कम उम्र में जोखिमभरे काम करने से उनको बहुत सारी समस्याएं हो जाती हैं, लेकिन फिर भी बिना थके और बिना रुके वह अपना काम करते रहते हैं।

डेंगू का आगमन होने से बच्चों की बढ़ती मुश्किलें

बातूनी रिपोर्टर माही व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

बारिश होने से जहां जहां पर नालियां बनी हैं वहां का तो पानी निकल जाता है, लेकिन जहां पर नालियां नहीं बनी हैं वहां पर तो पानी भरा रहता हैं। गन्दा पानी जमा होने से उस पानी में मच्छर हो जाते हैं, जिसके कारण वहां के अगल बगल के रहने वाले लोग भी परेशां हो जाते हैं।

ऐसा ही हाल हमारे लखनऊ के बच्चों का है। जब हमारे लखनऊ के पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के समय बच्चों से उनकी समस्या जानने की कोशिश कि तो बच्चों ने बताया कि दीदी यहां पर जब भी बारिश होती है तो हम लोगों के घर के सामने बहुत ज्यादा पानी भर जाता है और जब उस पानी को भरे ज्यादा दिन हो जाता है तो पानी में कीड़े और मच्छर हो जाते हैं। जिसके कारण हम लोगों को बहुत परेशानी हो जाती है।

जब भी हम बाहर सोते हैं तो हमें बहुत मच्छर काटते हैं जिसके कारण हमारे शरीर में छोटे छोटे दाने पड़ जाते हैं और बहुत ज्यादा खुजली होने लगती है।

दीदी यहां पर कुछ के घरों में लाइट है और कुछ के घरों में लाइट नहीं है। और जिनके घरों में लाइट नहीं है उनको तो बाहर ही सोना पड़ता है। दीदी जब भी हमारे अभिभावक या फिर हम लोग बाहर सोते हैं तब हम लोग को मच्छर काटते हैं, इसकी वजह से हम लोगों को बहुत सी बीमारियां भी हो सकती है।

बच्चों में बढ़ती गाली गलौज की बुरी आदत

बातूनी रिपोर्टर अभिषेक व रिपोर्टर किशन दिल्ली

नोएडा की डेढ़ सौ झुग्गियों का हमारे पत्रकारों ने दौरा किया। इस दौरान अधिकतर बच्चे अपनी झुग्गी बस्तियों में घर का काम करने में व्यस्त थे। उस झुग्गी बस्ती में इतना शोर शराबा हो रहा था। इतनी तेज तेज अपशब्द का प्रयोग हो रहा था कि 100 मीटर दूरी तक लोगों के घर में वह आवाज पहुंच रही थी। पत्रकारों ने झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से इस विषय पर जाना। बच्चों ने बताया कि इस स्थान पर हर एक घर में दो और दो से अधिक बच्चे रहते हैं। इस झुग्गी में लोग साधारण बात भी करते हैं तो वह लोग तेज तेज चिल्ला कर अपशब्द का प्रयोग जरूर करते हैं।

इस कारण झुग्गी बस्ती में अधिकतर बच्चे जब खेल रहे होते हैं या किसी से साधारण बात कर रहे होते हैं तो बड़े व्यक्तियों का गाली गलौज सुनकर बच्चे भी गाली गलौज देना सीख जाते हैं और गाली गलौज का प्रयोग हर साधारण बात में जरूर करते हैं। इतना ही नहीं यह बच्चे अपने घर में भी गाली

गलौज का प्रयोग करते हैं। माता पिता से बात करने के दौरान माता-पिता ने बताया कि इस झुग्गी में हर एक व्यक्ति गाली गलौज देकर ही बात करते हैं, बिना गाली गलौज के वह बात ही नहीं करते। इसका असर झुग्गी में रहने वाले बच्चों पर पड़ रहा है। 10 वर्ष तनिष्का ने बताया कि इतना ही नहीं जब हम अपनी गलियों से गुजर रहे होते हैं तो 15-16 वर्ष तक के बच्चे लड़कियों को देखकर अपशब्द का प्रयोग करने लग जाते हैं। हम उनको कुछ नहीं कह पाते क्योंकि यदि हमने कुछ कहा तो लड़ाई झगड़ा हो जाएगा। इस कारण हमें उस स्थान से चुपचाप जाना पड़ता है। इतना ही नहीं यह बच्चे स्कूल में भी जाकर क्लास के अंदर टीचर की मौजूदगी के दौरान लड़कियों के सामने भी गंदी-गंदी गालियों का प्रयोग करते हैं। परंतु हमें वह सुनना पड़ता है। हमने इस बात की शिकायत टीचर से भी की तो टीचर बच्चों को डांट कर बैठा देते हैं, फिर दोबारा से यह बच्चे अपशब्द का प्रयोग करने लग जाते हैं।

गलियों के गड्ढों में बारिश का पानी भरने से परेशान हुए बच्चे

बातूनी रिपोर्टर- सनी, बालकनामा रिपोर्टर -असलम

हमारे बालकनामा पत्रकार चकरपुर के दौरे पर गए थे। जहां हमारे पत्रकारों ने बच्चों के माध्यम से जाना कि उनकी गलियों के गड्ढों में बारिश का पानी भर जाता है, जिसके कारण वहां बहुत कीचड़ हो जाता है। पानी को बाहर निकालने तथा नालियों में ले जाने में कोई भी सहायता नहीं करता है। जिसके कारण मच्छरों की तादाद बढ़ जाती है और कई बड़ी बड़ी बीमारियां जैसे चिकनगुनिया, मलेरिया, टाइफाइड भी हो सकता है। इसी के साथ साथ हमारी पढ़ाई का भी बहुत नुकसान होता है। गड्ढों में इतना ज्यादा पानी भरा रहता है कि कोई ना कोई उसमें गिर जाता है। कभी-कभी तो गाड़ी तक गड्ढे में फस जाती है। ऐसा ही चलता रहता है। नगर निगम वालों को बोलो तो कहते हैं नालिया भर गई है, घरों में पीने का पानी भी बहुत ही गंदा आता है। पानी में बहुत गन्दी बदबू आती है जिससे कोई भी पानी नहीं पीना चाहता है। कई बार मजबूरी में हमें पानी पीना पड़ता है, जिससे हम बीमार भी हो जाते हैं। इसलिए हम

सरकार एवं बड़े अधिकारियों से कहते हैं परंतु हमारी कोई भी नहीं सुनता। कई कई बार तो घरों के अंदर भी पानी भर जाता है नगर निगम वाले कभी-कभी आते हैं तो खाली बोलते हैं कि सब कुछ ठीक हो जाएगा और यह बोलकर चले जाते हैं। हमारी पढ़ाई का बहुत नुकसान होता है। हमारे पत्रकारों ने कहा कि अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो उन्होंने कहा कि मैं बड़ी होकर स्वच्छता मंत्री बनूँगी।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471